प्रेस विज्ञप्ति

माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी ने राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान संस्थान, हिसार, द्वारा विकसित पुन: संयोजक एलाइजा (ईएलआईएसए) किटें जारी की

माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी ने कृषि भवन, नई दिल्ली में राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान संस्थान, हिसार, द्वारा विकसित पुन: संयोजक एलाइजा (ईएलआईएसए) किटें दिनांक 9 जनवरी, 2019 को जारी की : एक ग्लैंडर्स और दूसरी घोड़े में संक्रामक रक्ताल्पता (एनीमिया) के लिए. ये दोनों रोग भारत में अधिसूचनीय रोग हैं और देश में इनके नियंत्रण एवं उन्मूलन के लिए विशेष नैदानिकी की आवश्यकता है। ये प्रौद्योगिकियां एव एनआरसीई प्रकाशन कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री श्रीमती कृष्णा राज जी, डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक भाकृअनुप, डॉ. जे.के.जेना, उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान), डॉ. अशोक कुमार, सहायक महानिदेशक (पशु स्वास्थ्य), डॉ. एस. होन्नप्पागोल, पशुपालन आयुक्त और डॉ. बी.एन. त्रिपाठी, निदेशक, एनआरसीई, हिसार की गरिमामयी उपस्थिति में जारी किए गए। इस अवसर पर डॉ हरी शंकर सिंघा (प्रमुख अनुसंधानकर्ता) , डॉ यशपाल, डॉ राजेंद्र गोयल, डॉ बलविंदर कुमार, एवं श्रीमती शम्मी त्यागी भी मौजूद थे.

निदेशक डॉ बी एन त्रिपाठी ने संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों एवं प्रभावशाली अनुसंधान उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। डॉ त्रिलोचन महापात्र, महानिदेशक (आईसीएआर) ने स्वागत भाषण दिया और संस्थान के प्रौद्योगिकी संचालित अनुसंधान पर प्रकाश डाला। डॉ जे.के. जेना, उप महानिदेशक (पशु विज्ञान) ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री, श्री राधा मोहन सिंह ने संस्थान की अनुसंधान उपलब्धियों की सराहना की और कहा कि राज्य प्रयोगशालाओं को अनुसंधान और प्रौद्योगिकियों से भी मजबूत किया जाना चाहिए.

ग्लैंडर्स, घोड़ों, गधों एवं खच्चरों सहित अश्वों का एक घातक संक्रामक एवं अधिसूचनीय रोग है। आठ वर्षों से अधिक के सतत अनुसंधान प्रयासों के पश्चात, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान संस्थान, हिसार, कॉमप्लीमेंट-फिक्सेशन टैस्ट (सीटीएफ) के एक विकल्प के रूप में एक पुनर्योजक एंटीजन एलाइजा विकसित करने में सफल हुआ है। इस एलाइजा का भारत तथा ओआईई संदर्भित प्रयोगशाला, जर्मनी, दोनों में वैधीकरण किया गया है और इसने उत्कृष्ट संवेदनशीलता (97.2%) एवं विशिष्टता (99.6%) दर्शाई है। कृषि के पशुपालन विभाग से स्वीकृति मिलने के पश्चात इस प्रौद्योगिकी का आठ राज्य नैदानिक प्रयोगशालाओं को अंतरण किया गया है तथा उपयोग के लिए तैयार किट के रूप में रूपांतरण हेतु इसका वाणिज्यिकरण किया गया है। अश्व संक्रामक एनिमिया (ईआईए) अश्वों का एक पुराना, दुर्बल करने वाला और स्थाई संक्रामक रोग है, जो रिट्रो-विषाणु द्वारा फैलता है। संस्थान ने कोगिन्स के परीक्षण के विकल्प के रूप में पुनर्योगज पी26 प्रोटीन-आधारित एलिसा भी विकसित किया है। यह प्रौद्योगिकी ईआईए की नियमित रूप से निगरानी करने को सुनिश्चित करने हेतु एंटीजेन और सुमेलित प्रोटोकॉल का टिकाऊ एवं सजातीय स्त्रोत उपलब्ध कराएगी। ये दोनों किटें आयातित किटों की तुलना में अत्यधिक किफायती हैं। इसके अतिरिक्त माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने प्रौद्योगिकी बुलेटिन, एनआसीई प्रोफाइल एवं एनआरसीई के अनुसंधान परिणाम भी जारी किया। ये प्रकाशन अनुसंधानकर्ताओं शिक्षाविदों, नीतिनिर्माताओं, हितधारकों, उद्योग भागीदारों एवं पशु स्वास्थ्य विशेषज्ञों आदि को संस्थान के बारे में शीघ्र जानकारी उपलब्ध करवाएंगे।

ग्लैंडर्स एवं अश्व संक्रामक रक्ताल्पता रोगों की नैदानिक किट तथा रा० अ० अनु०के०
तकनीकी बुलेटिन अनावरण समारोह
Ceremony for Release of Glanders & Equine Infectious
Anaemia Diagnostic Kits and NRCE Technology Bulletin
द्वारा / by
दिनांक / Date: 9 January 2019